CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

वेद प्रकाश नागर
शोधार्थी
डॉ. हरलाल बाजिया
शोध निर्देशक
गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राजस्थान)
Email : 7487vednagar@gmail.com, Mobile- 907930098

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

शिक्षक तैयार करने वाले कार्यक्रमों की कामयाबी इस बात पर टिकी है कि खुद ट्रेनर यानी अध्यापक शिक्षक कक्षा कक्ष में कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी बात को केंद्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है। इसका मुख्य मकसद यह पता लगाना था कि अध्यापक शिक्षकों की अपनी शिक्षण दक्षता का उनके छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर क्या असर पड़ता है। साथ ही, यह भी देखा गया कि क्या शहरी या ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण इस प्रभाव में कोई अंतर आता है या नहीं।

इस शोध को पूरा करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को काम लिया गया। इसके तहत कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिलों के 20 अलग-अलग बी.एड. कॉलेजों को चुना गया, जहाँ से 100 अध्यापक शिक्षकों और 400 छात्राध्यापकों को एक न्यादर्श के रूप में चुना है। आँकड़े इकट्ठा करने के लिए मानकीकृत उपकरणों को उपयोग में लिया गया। । इन आँकड़ों की बारीकी से जाँच करने के लिए मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, सहसंबंध और टी-परीक्षण जैसी सांख्यिकीय विधियों को अपनाया गया।

जब 0.05 सार्थकता स्तर पर समंको की गणना की गई, तो शिक्षण दक्षता के लिए टी-मूल्य 1.77 और शैक्षिक अभिवृत्ति के लिए 1.81 निकलकर आया। चूँकि ये दोनों ही मान तय मानक मूल्य से कम हैं, इसलिए यह साफ़ हो गया कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच कोई वास्तविक या सार्थक अंतर मौजूद नहीं है। इसी आधार पर शोध में तय की गई शून्य परिकल्पनाओं को स्वीकार कर लिया गया।

सरल शब्दों में कहें तो निष्कर्ष यही निकलता है कि भौगोलिक क्षेत्र या परिवेश बदलने से न तो शिक्षकों की दक्षता पर कोई बड़ा फर्क पड़ता है और न ही छात्रों की अभिवृत्ति पर। यह अध्ययन ज़ोर देकर सुझाव देता है कि आज के बदलते दौर में हमें ग्रामीण-शहरी के फेर में पड़ने के बजाय, सभी अध्यापक शिक्षकों की कार्यकुशलता को निखारने के लिए समय-समय पर 'दक्षता संवर्धन कार्यक्रम' चलाने चाहिए। जब ट्रेनर बेहतर होंगे, तभी भावी शिक्षकों का दृष्टिकोण भी मजबूत और सकारात्मक बन सकेगा।

मुख्य शब्दः *अध्यापक शिक्षक, शिक्षण दक्षता, शैक्षिक अभिवृत्ति, छात्राध्यापक, टी-परीक्षण, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र.*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव को जीवन जीने की कला सिखाती है। स्वावलम्बी बनाती है, जिसे प्राप्त करके मानव जीवन एक फूल की तरह खिल जाता है , इन फूलों की सुगन्ध से सारा जगत महक उठता है।वैदिक काल से लेकर आज तक की शिक्षा हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप बदलती रही है। भविष्य में भी शिक्षा का स्वरूप हमारी आवश्यकता के अनुरूप ही होगा क्योंकि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।

शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ है ,क्योंकि वही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी रूप प्रदान करता है। किंतु किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का वास्तविक आधार उसके प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। यही कारण है कि शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में अध्यापक शिक्षकों की भूमिका अत्यंत निर्णायक मानी जाती है। अध्यापक शिक्षक न केवल भावी शिक्षकों को विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उनके शिक्षण व्यवहार ,दृष्टिकोण ,मूल्यों एवं व्यावसायिक कौशलों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्यापक शिक्षक न केवल स्वयं शिक्षण करता है, बल्कि वह भावी शिक्षकों के लिए शिक्षण व्यवहार का प्रत्यक्ष उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। उसकी शिक्षण दक्षता छात्राध्यापकों के सीखने के ढंग ,उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को गहराई से प्रभावित करती है। इस प्रकार अध्यापक शिक्षक की शिक्षण दक्षता का प्रभाव बहुआयामी होता है।

समस्या का औचित्य

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक-प्रशिक्षण को शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता सुधारने का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है। भावी शिक्षकों के निर्माण की जिम्मेदारी शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों पर होती है, जहाँ अध्यापक शिक्षक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। अध्यापक शिक्षक अपनी शिक्षण दक्षता के माध्यम से छात्राध्यापकों को न केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करते हैं ,बल्कि उनमें शिक्षण कौशल ,शैक्षिक मूल्य तथा व्यावसायिक दृष्टिकोण का भी विकास करते हैं। इस संदर्भ में अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का स्तर छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह एक महत्वपूर्ण शैक्षिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आती है।

अध्यापक शिक्षकों की वास्तविक शिक्षण दक्षता और उसके शैक्षिक परिणामों पर अपेक्षाकृत कम व्यवस्थित शोध उपलब्ध है। कई बार शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कमी का कारण पाठ्यक्रम या संसाधनों को माना जाता है, जबकि अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण

दक्षता की भूमिका को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता। इस स्थिति में प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि यह अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास करता है।

समस्या कथन

"अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध समस्या शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का एक अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गये हैं-

- शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।
- शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का शहरी छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का ग्रामीण छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श

वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रशिक्षण संस्थानों ,अध्यापक शिक्षकों तथा छात्राध्यापकों का चयन सर्वेक्षण विधि से किया है । इस शोध अध्ययन के लिए 20 शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत 100 अध्यापक शिक्षकों व 400 छात्राध्यापकों को कोटा संभाग के) कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ (जिले के विभिन्न बी.एड .कॉलेजों से अध्ययन के लिए चुना गया है।

शोध परिकल्पनाएँ

- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव नहीं है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

मानकीकृत उपकरण

- शिक्षण दक्षता - डॉ. बी.के. पासी तथा एम.एस. ललिता द्वारा मानकीकृत एवं प्रामाणिक उपकरण 'सामान्य शिक्षण दक्षता स्केल' का उपयोग किया गया है।
- शैक्षिक अभिवृत्ति- एस.पी.अहलूवालिया द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण शिक्षक अभिवृत्ति) इन्वेन्ट्री (को उपयोग में लिया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, सहसम्बन्ध व टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों तक ही सीमित रखा गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अन्तर

समूह	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी-मूल्य T	सार्थकता
शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता	50	110	10.48	1.77	0.05 स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता	50	113.8	11.016		

प्रस्तुत शोध ग्रंथ की पूर्व-उल्लिखित सारणी संख्या 1 के माध्यम से नगरीय (शहरी) एवं ग्रामीण अंचल के अध्यापक-शिक्षकों की व्यावहारिक शिक्षण दक्षता के मध्य व्याप्त अंतर का सांख्यिकीय विवरण प्रस्तुत किया गया है। सारणीबद्ध समंकों के सूक्ष्म अवलोकन से यह सुस्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के अध्यापक-शिक्षकों का शिक्षण दक्षता मध्यमान 110.0 तथा प्रामाणिक विचलन 10.48 है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के समकक्षों का यही मध्यमान 113.8 एवं प्रामाणिक विचलन 11.01 अंकित किया गया है।इससे यह तार्किक निष्कर्ष निकलता है कि भौगोलिक परिवेश (शहरी या ग्रामीण) अध्यापक-शिक्षकों की कार्य-कुशलता को प्रभावी रूप से प्रभावित नहीं करता है।

सारणी 2

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अन्तर

समूह	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी-मूल्य t	सार्थकता
शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति	200	213.70	36.49	1.81	0.05 स्तर पर स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति	200	220.0	33.25		

प्रस्तुत अनुशीलन के अंतर्गत सारणी संख्या 2 में शहरी एवं ग्रामीण परिवेश से सम्बद्ध छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य तुलनात्मक अंतर को रेखांकित किया है। प्रदत्तों के विश्लेषण से उभरकर सामने आता है कि नगरीय क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 213.70 एवं प्रामाणिक विचलन 36.49 है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का यही मध्यमान 220.0 तथा प्रामाणिक विचलन 33.25 दर्ज किया गया है।अतः इस संदर्भ में प्रतिपादित शून्य परिकल्पना सहर्ष स्वीकार की जाती है।

सारणी 3

शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान

चर	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता 0. 05	
शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता	शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति	0.19	धनात्मक नगण्य सहसंबंध

सारणी 3 में शहरी क्षेत्र के अध्यापक-शिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण दक्षता एवं वहाँ अध्ययनरत छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य अंतर्निहित सह-संबंध की स्थिति को स्पष्ट किया गया है। इन दोनों चरों के प्राप्तांकों के मध्य जब पियर्सन सह-संबंध गुणांक (r) की गणना की गई, तो सह-संबंध का मूल्य 0.19 प्राप्त हुआ।अतः इस क्षेत्र में निर्मित शून्य परिकल्पना पूर्णतः स्वीकृत की जाती है।

सारणी 4

ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान

चर		सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता 0.05
ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता	ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति	0.23	न्यून धनात्मक सहसंबंध

सारणी 4 के माध्यम से ग्रामीण पृष्ठभूमि के अध्यापक-शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं उसी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य व्याप्त सह-संबंधात्मक प्रारूप को दर्शाया गया है। सांख्यिकीय सूत्रों के अनुप्रयोग द्वारा दोनों चरों के मध्य गणना करने पर सह-संबंध गुणांक (r) का मूल्य 0.23 प्राप्त हुआ है।परिणामस्वरूप, इस संबंध में निर्मित शून्य परिकल्पना पूर्णतः अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष

- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का शहरी क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

- वैदिक कालीन शिक्षा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य की आधारभूत आवश्यकता से जोड़ते हुये अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता आज के युग की प्रमुख आवश्यकता है।
- वैश्वीकरण के दौर में अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं शैक्षिक अभिवृत्ति को दृष्टिगोचर करते हुये छात्राध्यापकों के लिए नीव का पत्थर है।
- अध्यापक शिक्षकों के लिए समयानुकूल दक्षता संवर्धन कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए।
- सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु छात्राध्यापकों में प्रशिक्षण के प्रति आदर्श शिक्षण पर जोर दिया जाना चाहिए जो अभिवृत्ति विकास का आधार है।
- यह शोध कार्य सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण की मूल्यांकन पद्धति का सशक्त माध्यम होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव

- इस शोधकार्य कोटा संभाव के कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय तक ही शामिल किया गया इसे राज्य स्तर पर भी किया जा सकता है।
- शोधार्थी द्वारा भविष्य में क्षेत्र विशेष के विभिन्न वर्गों, सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसचित जनजाति, EWS के छात्राध्यापकों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। यह अध्ययन केवल शहरी ग्रामीण परिवेश तक सीमित था।
- भविष्य में इस शोध को सरकारी व निजी संस्थानों के प्राथमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- विभिन्न विषयों) जैसे - विज्ञान, कला एवं वाणिज्य (के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

I. अग्रवाल, जे. सी. (2011), शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
II. अग्रवाल, आर. एन. (2014), शिक्षा में अनुसंधान की विधियाँ. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
III. अस्थाना, बिपिन एवं अग्रवाल, वी. पी. (2010), शैक्षिक अनुसंधान. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
IV. Mohanty, J. (2010). Teacher Education. New Delhi: Deep and Deep Publications.
V. Passi, B. K. (2011). Becoming Better Teacher. Ahmedabad: Sahitya Mudranalaya
VI. कोठारी, सी. आर. (2011), अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल।
VII. माथुर, एस. एस. (2012), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया. जयपुर: आर्य बुक डिपो।
VIII. मंगल, एस. के. (2013), उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग।
IX. मिश्रा, आर. सी. (2016), प्रभावी शिक्षण एवं शिक्षक दक्षता. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग